विचार बिन्दु

जब तुम्हारे पड़ौसी के घर में आग लगी हो, तो तुम्हारी संपत्ति पर भी खतरा है। –होरेस

आयुर्वेद का रोचक इतिहास

आयुर्वेद चिकित्सा की एक प्राचीन प्रणाली है जो कम से कम 5,000 साल पहले भारत में उत्पन्न हुई। शब्द 'आयुर्वेद' का अर्थ जीवन का ज्ञान है। आयुर्वेद को प्राय: 'जीवन का विज्ञान' या 'जीने की कला' भी कहा जाता है। आयुर्वेद की उत्पत्ति और प्रारंभिक सूत्र वेदों में उपलब्ध हैं, जिनका काल 1500 ईसा पूर्व माना जाता है। वेदों में दर्शन, आध्यात्मिकता और चिकित्सा सहित विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला के बारे में जानकारी है। ऐसा माना जाता है कि आयुर्वेद के सिद्धांतों को सर्वप्रथम चार वेदों में से एक, अथर्ववेद, में रेखांकित किया गया था। समय के साथ, आयुर्वेद एक व्यापक स्वास्थ्य सेवा प्रणाली के रूप में विकसित हुआ, जिसमें आहार, व्यायाम, ध्यान, उपचार और सर्जरी सहित स्वास्थ्य और कल्याण के सभी पहलुओं को शामिल किया गया। आयुर्वेदिक चिकित्सकों ने मानव शरीर की गहरी समझ विकसित की। साथ ही मानव शरीर और पर्यावरण के बीच परस्पर संबंध को भी व्यापक रूप से समझा। इस ज्ञान का उपयोग रोगियों के लिए व्यक्तिगत उपचार योजना विकसित करने के लिए किया।

आयुर्वेद भारत में हजारों वर्षों तक फलता-फूलता रहा, लेकिन औपनिवेशिक युग के दौरान इसे कठिन चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इस काल में पश्चिमी चिकित्सा स्वास्थ्य सेवा का प्रमुख रूप बनती गई। हालाँकि, हाल के वर्षों में, भारत और दुनिया भर में आयुर्वेद में नए सिरे से रुचि पैदा हुई है, और अब इसे एक मूल्यवान पूरक चिकित्सा के रूप में मान्यता प्राप्त है। आज, आयुर्वेद भारत में व्यापक रूप से प्रचलित है और दुनिया के अन्य हिस्सों में भी इसने लोकप्रियता हासिल की है। आयुर्वेद के सिद्धांत इस विचार पर आधारित हैं कि प्रत्येक व्यक्ति अद्वितीय है और उसका अपना व्यक्तिगत दोष संतुलन है। तीन मुख्य दोष हैं: वात, पित्त और कफ। प्रत्येक दोष विशिष्ट विशेषताओं और असंतुलन से जुड़ा होता है, और आयुर्वेदिक चिकित्सक इस जानकारी का उपयोग बीमारियों के निदान और उपचार के लिए करते हैं। पश्चिमी चिकित्सा के विपरीत, जो लक्षणों के इलाज पर ध्यान केंद्रित करती है, आयुर्वेद का उद्देश्य बीमारी के मूल कारण को दूर करना और शरीर और दिमाग में संतुलन बहाल करना है।

हालाँकि आयुर्वेद का एक लंबा और समृद्ध इतिहास है, पर इसे विवादों में घसीटने का इतिहास भी कम लम्बा नहीं है। कुछ आलोचकों को आयुर्वेदिक उपचारों की सुरक्षा और प्रभावकारिता के बारे में चिंता लगी रहती है। इसके अतिरिक्त, दूषित आयुर्वेदिक उत्पादों के रोगियों को नुकसान पहुँचाने के बारे में भी अब बहुत प्रकाशन होता है। इन आलोचनाओं के बावजूद, आयुर्वेद चिकित्सा लोकप्रिय और कारगर है, और दुनिया भर के असंख्य लोगों ने आयुर्वेदिक उपचारों के माध्यम से उन रोगों से राहत पाई है जिन्हें आधुनिक चिकित्सा पद्धति ठीक नहीं कर पाती। समकालीन विश्व में जैसे-जैसे प्राकृतिक और पूर्ण स्वास्थ्य सेवा में रुचि बढ़ रही है, आयुर्वेद चिकित्सा की भूमिका भी बढ़ती जा रही है।

आयुर्वेद को मूल रूप से अथर्ववेद का उपवेद माना जाता है। इसका मूल कारण यह है कि अथर्ववेद में न केवल बहुत स्पष्ट रूप से चिकित्सा का वर्णन है, अपितु ऋग्वेद की तुलना में औषधियों की संख्या भी अधिक अंकित है। यह बात सत्य है कि ऋग्वेद का औषधि सूक्त आयुर्वेद का सबसे पुराना दस्तावेज है, किन्तु अथर्ववेद में भारतीय चिकित्सा पद्धति का तुलनात्मक रूप से अधिक प्रायोगिक विस्तार मिलता है।

आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति भारत की मूल्यवान और अनोखी धरोहर है। आयुर्वेद का उद्भव काल 6000 ई. पू. माना जाता है, पर मतभिन्नता के बावजूद इसे 5000 साल पुरानी चिकित्सा पद्धति तो माना ही जाता है। आयुर्वेद का सबसे पुराना उपलब्ध ग्रन्थ ई.पू. पांचवी शताब्दी में आचार्य चरक द्वारा लिखित चरक संहिता है। उसके पश्चात् सुश्रुत संहिता, अष्टांग हृदय, सारंगधर संहिता, माधव निदान, भावप्रकाश आदि ग्रन्थ लिखे गये। इनमें से चरक संहिता से प्रारंभ कर 15वीं शताब्दी में लिखित भावप्रकाश तक का समयकाल लगभग 2000 वर्ष का है। इस यात्रा में आचार्य नागार्जुन की रस औषधियों सहित तमाम रोचक नवाचार हुये जो आज भी आयुर्वेद चिकित्सा के माध्यम से लोगों के चेहरे पर मुस्कराहट ला रहे हैं।

संक्षेप में देखा जाये तो अथर्ववेद काल में चिकित्सा मुख्य रूप से देवताओं के ऊपर आश्रित मानी जाती थी, यही कारण है कि इस प्रकार की चिकित्सा को बाद में आयुर्वेद संहिता काल में दैव-व्यापाश्रय चिकित्सा के रूप में जाना गया है। अथर्ववेद काल की चिकित्सा में एक महत्वपूर्ण बात यह है कि एक रोग के लिए एक औषधि का प्रयोग ही दृष्टिगत होता है, किन्तु साथ ही उपचार में देवताओं, मंत्रों, पूजा-पाठ आदि अनिवार्य रूप से प्रयुक्त हुये। दैवव्यपाश्रय चिकित्सा का यह श्रेष्ठ काल रहा है।

अथर्ववेद परम्परा का कौशिक सूत्र इस परम्परा का अगला पड़ाव माना जाता है। कौशिक सूत्र मूलत: अथर्ववेद परम्परा का सूत्र है। अत: स्वाभाविक रूप से अथर्ववेद की चिकित्सा तथा औषधीय पौधों के संदर्भ और प्रक्रिया यथावत पायी जाती है। तथापि अथर्ववेद और कौशिक सूत्र दोनों में उपलब्ध चिकित्सा विवरण में कुछ मूलभूत अन्तर है।

जहां एक ओर अथर्ववेद में एक रोग के लिये एकल औषधि और साथ में पूजा-पाठ का विधान प्रयुक्त किया गया है, वहीं कौशिक सूत्र में पूजा-पाठ का विधान तो है परन्तु एकल औषधियों की जगह रोगों के लिये अनेक औषधियों के मिश्रण या योग का प्रयोग हुआ। दूसरा अंतर यह आया कि कौशिक सूत्र में ऐसी अनेक औषधियां वर्णित हैं, जिनका संदर्भ अथर्ववेद में नहीं मिलता है। इसका स्पष्ट तात्पर्य यह हुआ कि आयुर्वेद के विकास की यात्रा में अथर्ववेद एक महत्वपूर्ण पड़ाव है, किन्तु बाद में रचित कौशिक सूत्र में नई औषधियों और रोगों के लिये नवाचारी योग जुड़ गये। हालांकि कौशिक सूत्र में भी स्पष्टतया पूजा-पाठ को चिकित्सा में उपयोग लेने की अथर्व परम्परा को तो यथावत दिया गया, परन्तु केवल पूजा-पाठ और एक औषधि की बजाय बहुत औषधियां योग देने का तात्पर्य यह लगाया जाता है कि पूजा-पाठ के साथ-साथ औषधियों को भी बराबर का महत्त्व दिया गया है। अथर्व परम्परा का कौशिक सूत्र निश्चित रूप से आयुर्वेद के विकास में एक मील का पत्थर है। परन्तु यह भी सही है कि चिकित्सा के मूल दर्शन के रूप में पूजा-पाठ (दैवव्यपाश्रय चिकित्सा) आदि को कौशिक सूत्र में भी बराबर महत्व दिया गया है।

आयुर्वेद भारत में हजारों वर्षों तक फलता-फूलता रहा, लेकिन औपनिवेशिक युग के दौरान इसे कठिन चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इस काल में पश्चिमी चिकित्सा स्वास्थ्य सेवा का प्रमुख रूप बनती गई। हालाँकि, हाल के वर्षों में, भारत और दुनिया भर में आयुर्वेद में नए सिरे से रुचि पैदा हुई है, और अब इसे एक मूल्यवान पूरक चिकित्सा के रूप में मान्यता प्राप्त है।

आगे चलकर संहिताकाल, जो लगभग 1000 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर पहली शताब्दी तक माना जा सकता है, को आयुर्वेद का स्वर्णकाल कहा जाता है। एक अत्यन्त महत्वपूर्ण बात यह है कि संहिताकाल में उस समय तक चिकित्सा का जो भी ज्ञान वेदों, उपनिषदों, ब्राम्हणों या सूत्रों में उपलब्ध था, उस सम्पूर्ण ज्ञान को एकत्र कर संहिताकाल में आचार्यों ने जांच-परख कर और प्रत्यक्ष प्रायोगिक परीक्षण कर संहिताबद्ध किया। यही कारण है कि आयुर्वेद की मूल संहिताओं में चिकित्सा यर्थातत: युक्ति-व्यापाश्रय (प्रमाण-आधारित या रेशनेल मेडिसन) में बदल गई। इस प्रकार अंतत: आयुर्वेद पूर्णत: वैज्ञानिक धरातल पर आ गया।

संहिताकाल का आयुर्वेद वांग्मय मूल रूप से चरकसंहिता और सुश्रुतसंहिता में उपलब्ध है। चरकसंहिता मूलत: काय चिकित्सा से संबंधित ग्रन्थ है, जबकि सुश्रुत संहिता मूलत: शल्य चिकित्सा से संबंधित है। दोनों में इस असमानता के बावजूद दोनों संहितायें प्रमाण-आधारित वैज्ञानिक दृष्टिकोण को ही प्रतिपादित करती हैं। इन संहिताओं में प्रमाण, कारण-कार्य प्रभाव, तर्क-संगतता आदि को उतना ही महत्व दिया गया है जितना कि आज के वैज्ञानिक शोध में दृष्टिगोचर होता है। यही कारण है कि पूरा विश्व आचार्य सुश्रुत को शल्य-चिकित्सा का जन्मदाता मानता है।

आचार्य सुश्रुत ने शल्य क्रिया के इतने विस्तृत सूत्र और विधियाँ लिखी कि उसमें कोई ऐसा कदम नहीं छूटा जिसे आज आधुनिक विज्ञान ने बिलकुल नये सिरे से खोजा हो। यहाँ तक कि शल्य क्रिया में पृथक से काम आने वाले जो औजार जगह आचार्य सुश्रुत ने डिजाइन किये उसमें कोई बहुत बड़ा परिवर्तन आज भी नहीं आया है। लगभग समान औजार आज भी प्रयुक्त हो रहे हैं। आप यह कह सकते हैं कि इन औजारों के निर्माण के लिये आज बेहतर तकनीक तो उपलब्ध है, किन्तु उनके मूलभूत डिजाइन में कोई विषेष अन्तर नहीं आया है।

इस संक्षिप्त चर्चा से स्पष्ट हो जाता है कि वैदिक काल से लेकर संहिता काल तक और संहिता काल से आज तक आयुर्वेद के विकास की एक बड़ी रोचक यात्रा रही है।

आधुनिक विज्ञान की दृष्टि से परखने पर चरक संहिता शरीर-विज्ञान, भ्रूणविज्ञान, फिजियोलॉजी, फार्माकोलॉजी, खाद्य एवं पोषण, पाचनतंत्र एवं पाचन-क्रियाविज्ञान, रक्त-परिसंचरण तंत्र, मानस-विज्ञान, रोग निदान-विज्ञान, प्रिवेंटिव कार्डियोलॉजी, मेडिको-बॉटनी, एवं काय-चिकित्सा जैसे अनेक विषयों का महत्वपूर्ण ग्रन्थ है।

आज विश्वभर के वैज्ञानिक अपने शोध-पत्रों के प्रकाशन में पूर्ववर्ती शोध का संदर्भ देते हैं, ठीक उसी प्रकार प्राचीन आयुर्वेदाचार्यों ने, समय और ज्ञान की लंबी यात्रा में उत्तरोत्तर, अपने पूर्ववर्ती विद्वानों की शोध का विवरण देते हुये आयुर्वेद को उत्तरोत्तर स्वयं के अनुभवों से परिष्कृत किया। चरक संहिता में वर्णित औषधीय पौधों की प्रजातियों की संख्या और उपयोगिता का वर्णन बाद के ग्रन्थों में निरंतर बढ़ता गया है। चरक संहिता में कुल 627 औषधीय पादपों को पहचाना जा सका है। सुश्रुत संहिता और अष्टांगहृदय सहित मुख्य ग्रंथों को मिलायें तो 1250 औषधीय पौधों का आयुर्वेद में अधिक उपयोग हो रहा है।

आचार्यों ने अपने पूववर्ती विद्वानों द्वारा बताई गई औषधियों पर प्रमाण-आधारित भरोसा किया। साथ ही, स्वस्थ व्यक्तियों के स्वास्थ्य की रक्षा और रोगियों की रुग्णता शान्त करने के लिये समय के साथ नई-नई औषधियों की खोज, या पूर्व से ज्ञात औषधियों के नवीन गुणों को पहचाना, परिभाषित किया और अपने ग्रन्थों में उल्लेख किया।

समय के साथ बढ़ती विशेषज्ञता भी बड़ी रोचक है। चरक संहिता में यद्यपि आयुर्वेद चिकित्सा के सभी अंगों को समाहित किया गया, परंतु मूल ध्यान काय-चिकित्सा और रसायन चिकित्सा की ओर ही रहा। आचार्य सुश्रुत ने आयुर्वेद के विभिन्न पहलुओं का विवरण दिया, परंतु सुश्रुत संहिता में विशेषज्ञता शल्यक्रिया में केन्द्रित रही। काश्यप संहिता बाल एवं महिला स्वास्थ्य पर केन्द्रित है। आचार्य चक्रदत्त ने एकल औषधि चिकित्सा पद्धति में विशेषज्ञता विकसित कर लिखा। इसी प्रकार पॉली-हर्बल या बहु-पादपीय औषधियों द्वारा चिकित्सा में आचार्य सारंगधर का कोई सानी नहीं है।

आयुर्वेद में आधुनिक वैज्ञानिक शोध हालाँकि अभी बहुत अधिक नहीं है, फिर भी स्कोपस डेटाबेस से ज्ञात होता है कि वर्ष 1923 से 2025 के दौरान प्रकाशित कुल 65,508 शोधपत्रों में कहीं न कहीं आयुर्वेद का उल्लेख हुआ है, उनमें से 16,146 शोधपत्र विशेषकर आयुर्वेद पर केन्द्रित हैं। इसके अतिरिक्त आयुर्वेद में प्रयुक्त औषधीय पौधों पर कम से कम 15 लाख से अधिक शोधपत्र हैं। पिछले एक दशक के दौरान भारत के कई दिग्गज वैज्ञानिकों और आयुर्वेदाचार्यों की शोध ने आयुर्वेद का प्रमाण-आधार बहुत मजबूत किया है। आयुर्वेदिक बायोलॉजी, आयुर्वेदिक जीनोमिक्स, होल-सिस्टम क्लिनिकल ट्रायल्स आदि में उपयोगी कार्य हो रहा है। आधुनिक विज्ञान के समावेश से आयुर्वेद का और बेहतर उपयोग मानवता के कल्याणार्थ किया जा सकता है, परन्तु यह तभी संभव है जब वर्ष 1600 से 1947 के मध्य आयुर्वेद को दुर्बल करने के जितने भारी प्रयास हुये, उससे दुगने प्रयास अब इसे आगे बढ़ाने के लिये किये जायें।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय,
(इंडियन फारेस्ट सर्विस से सेवानिवृत्त, वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

आधुनिक वास्तुकला एवं भारतीय विरासत

अविनाश जोशी

आधुनिक वास्तुकला का संरक्षण एक सवालिया निशान के कटघरे में खड़ा है। जो भारतीय आर्किटेक्ट्स के लिए चिंता का विषय है। खासकर स्वतंत्रता के बाद की इमारतों के विध्वंस और योजनाबद्ध विध्वंस की श्रृंखला के बाद भारत यूरोपीय उपनिवेशवाद के लंबे दौर से उभर रहा है और आधुनिक युग की कलाओं और वास्तुकला के बीच अपनी परंपराओं को सहेजने की कोशिश कर रहा है। लेकिन यूरोपीय प्रभाव अभी भी इस विधा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है कि क्या भारतीय है और क्या महज़ नकल है। भारतीय वास्तुकारों के लिए यह एक चुनौती भरा कार्य है। आज के समय में भारतीय वास्तुकारो के लिए ऐसी शैली बनाना कठिन हो रहा है जो एक उभरती हुई भारतीय सभ्यता को बाकी दुनिया और अपने निवासियों के सामने पर्याप्त रूप से प्रस्तुत कर सके।

शहरों की योजना बनाने में वास्तुकला एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और सभ्यता के अवशेष बड़े पैमाने पर पीछे छोड़ी गई इमारतों के माध्यम से देखे जाते हैं। वास्तुकारों से कहा जाता है कि वे इतिहास को याद न करें, लेकिन पिछली सभ्यताओं द्वारा बनाए गए डिज़ाइन के सभी खजानों – नालंदा, साँची और एलोरा – को नज़रअंदाज करना कैसे संभव है? आज हम चौकोर और गोल गगनचुंबी इमारतों की साधारण इमारतों में सिमट कर रह गए हैं, जो यह दर्शाती हैं कि बड़ी संख्या में लोग समृद्धि और विकास को क्या कहते हैं। एक विशिष्ट भारतीय सभ्यता बनाने का टैगोर का दृष्टिकोण तेजी से लुप्त हो रहा है क्योंकि उपमहाद्वीप की इमारतें दुबई और सिंगापुर की छोटी रियासतों की नकल करने की कोशिश कर रही हैं। हालाँकि, ये प्रतिकृतियाँ वैश्विक शहरों में देखे जाने वाले आधुनिक युग के आश्चर्यों की गुणवत्ता या पैमाने से मेल नहीं खाती हैं। क्या हमारी वर्तमान सभ्यता अब से कुछ सदियों बाद मुड़ी हुई धातु के ढेर और कांच के टुकड़ों के रूप में देखी जाएगी?

भारत का कोई भी शहर आधुनिक शहर के लिए कोई समाधान प्रस्तुत नहीं करता है। वे सभी तेजी से रहने लायक नहीं रह गए हैं, जिससे कुछ विशेषाधिकार प्राप्त लोग गोवा, हिल स्टेशनों या विदेश में दूसरे घरों की तलाश कर रहे हैं।

वास्तविक परिवर्तन देखने का मौका तब मिला जब शेष आंध्र प्रदेश राज्य के लिए एक राजधानी की परिकल्पना की गई। बौद्ध राजधानी के नाम पर इसे अमरावती कहा जाना था जो इस क्षेत्र के पुराने साम्राज्यों का केंद्र था। बहुत कम लोग जानते हैं कि उस भूमि, जो अब आंध्र प्रदेश है, में लोग 800 वर्षों तक बौद्ध धर्म का पालन करते रहे। हालांकि, कई प्रयासों के बाद, वर्तमान राज्य सरकार ने तीन राजधानी क्षेत्र बनाने का फैसला किया और सत्ता का विकेंद्रीकरण किया गया – लंबाई को देखते हुए एक स्मार्ट निर्णय राज्य। लेकिन इन विभिन्न राजधानियों में उपनगरों की संख्या अधिक थी जहां कंक्रीट और कांच पनपते हैं।

यह सब बहुत निराशाजनक लगता है और वास्तव में ऐसा है। भारतीय वास्तुकला और उसके आवास का भविष्य गोवा में कुछ भव्य विला और मुंबई और दिल्ली में कुछ बड़े वातानुकूलित फ्लैटों द्वारा दर्शाया गया है। इसलिए वास्तुकारों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे शहर के परिदृश्यों को एक साथ लाने का प्रयास करें और नए डिजाइन तैयार करें जो समुदाय-संचालित हों। मुंबई का एक उपनगर कोलाबा, एक ऐसी बस्ती का उत्कृष्ट उदाहरण है जहाँ अमीर और गरीब एक साथ मिलते हैं और पूर्ण जीवन जीते हैं। यह शक्तिशाली अधिकतम शहर का एक सूक्ष्म रूप है और एक ऐसी जगह है जहां सब कुछ उपलब्ध है और विरासत इमारतों को कुछ सुरक्षा प्रदान की जाती है। इमारतों का पुन: उपयोग किया जा रहा है और एक उत्कृष्ट उदाहरण एक पूर्व गोदाम के अंदर बनाया गया कैफे है जो जल गया था और बाहरी हिस्सा बरकरार रखा गया था। एक अन्य प्रसिद्ध नवीकरण बैलार्ड एस्टेट में एक बर्फ फैक्ट्री है जिसे घटनाओं के लिए एक आधुनिक गैलरी और प्रदर्शनी स्थल में बदल दिया गया है।

चारमीनार पर केन्द्रित हैदराबाद का पुराना शहर भी आधुनिक राजधानी के महानगर के भीतर एक स्वतंत्र बस्ती है और आधुनिक हैदराबाद की अराजकता से काफी स्वतंत्र है। इसकी प्राचीनता के कारण, निवासी अपनी अर्थव्यवस्था के साथ एक द्वीप पर रहते हैं और काम करते हैं। भारत के कई अन्य शहरों में ये गुण हैं – जिनमें जोधपुर, लखनऊ और कोलकाता सबसे बड़े हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि भारत में मंदिरों, मस्जिदों, महलों और किलों की महान स्थापत्य परंपरा रही है। यहां तक कि जब भी हम भारतीय वास्तुकला के संदर्भ में सोचते हैं, हमारे मस्तिष्क में ताजमहल, फ़तेहपुर सीकरी और दक्षिण भारत के मंदिरों का चित्र बन जाता है।

आर्किटेक्ट इन नुकसानों पर दुख व्यक्त करते हैं क्योंकि वे अपने सर्वोत्तम मूल्यों को अपनाते हैं और देश की प्रगति, आविष्कार और वास्तुकला के योगदान पे बाते करते है इन अनुकरणीय संरचनाओं के बिना, वे चिंतित हैं कि पहले से ही संकटग्रस्त पेशा और अधिक तकलीफ में आ जाएगा।

कुछ प्रमुख कारकों ने आधुनिक वास्तुकला को इस स्थान पर ला खड़ा किया है। सबसे पहले, उम्र को विरासत के गठन के प्राथमिक निर्धारक के रूप में रखा जा रहा है। दूसरा, भारतीय वास्तुकला विमर्श आधुनिक वास्तुकला पर गैर-स्वदेशी होने का संदेह जताता है। तीसरा है आधुनिक वास्तुकला का नए के प्रति व्यस्त रहना और अपनी प्रासंगिकता स्थापित करने के लिए इतिहास को नकारना। चौथा, इमारतों के उपयोग और विनिमय मूल्यों के बीच संघर्ष है, जो हाल ही में तेज हो गया है क्योंकि प्रीमियम भूमि पर लगाया गया है, न कि उस इमारत पर जो उस पर खड़ी है। किसी संरचना को विरासत घोषित करने में उसकी उम्र एक प्रमुख निर्धारक रही है। भारत में ऐसा माना जाता है कि केवल 100 वर्षों तक जीवित रहने वाली संरचनाएं ही विरासत के रूप में योग्य हैं और कानूनी सुरक्षा प्राप्त कर सकती हैं। दीर्घायु प्रमुख निर्धारण परीक्षण है। धारणा यह है कि संरचनाओं के महत्व का आकलन करने के लिए पर्याप्त वर्षों की आवश्यकता होती है, और इसलिए, जितनी पुरानी होगी, उतना बेहतर होगा।

इस संदेह को चुनौती दी जानी चाहिए कि आधुनिक इमारतें स्वदेशी नहीं हैं और इसे ठीक किया जाना चाहिए। भारत में आधुनिक वास्तुकला को यूरोपीय और अमेरिकी वास्तुकला की छाया के रूप में देखा जाता है। भारत में प्रारंभिक आधुनिक वास्तुकला को इसकी स्थितियों की एक आश्वस्त अभिव्यक्ति और एक स्वतंत्र देश की प्रगतिशील दृष्टि का प्रतिनिधित्व करने वाली एक मुक्तिदायक परियोजना के रूप में देखा जाने लगा है।

आधुनिक वास्तुकला को विध्वंस से बचाने के लिए उसके मूल्य को परिभाषित करने की सबसे बड़ी जिम्मेदारी वास्तुकारों की है। किसी आधुनिक इमारत की सुरक्षा करना केवल संरचना की लंबी उम्र तक ही सीमित नहीं है। किसी भवन का पुन: उपयोग या उसे अन्य उपयोग के लिए अनुकूलित करने से भवन निर्माण सामग्री के उत्पादन में खर्च होने वाली ऊर्जा की बचत होती है, जो ध्वस्त होने पर बर्बाद हो जाएगी। पुन: उपयोग से मौजूदा संरचना के स्थान पर नई संरचना के निर्माण में खर्च होने वाली ऊर्जा की भी बचत होती है। कई नए निर्माणों को देखते हुए, ऐसे उपायों से बड़ा अंतर आएगा। अनुभवजन्य रूप से यह प्रदर्शित करना महत्वपूर्ण होगा कि ऐतिहासिक इमारत का पुन: उपयोग या विस्तारित उपयोग कितना बचाता है और यह एक अच्छा पर्यावरणीय निर्णय कैसे है। आधुनिक वास्तुशिल्प स्थलों की मरम्मत चुनौतीपूर्ण हो सकती है। अहमदाबाद स्टेडियम की तरह कंक्रीट संरचनाओं को संरक्षित करना चुनौतीपूर्ण है। आधुनिक इमारतों में उपयोग की जाने वाली ग्लेज़िंग केवल कभी-कभी ही ऊर्जा कुशल होती है। नाजुक आधुनिक सामग्रियों और संरचनाओं के संरक्षण के लिए आवश्यक तकनीकें और ज्ञान अभी भी विकसित हो रहे हैं। इन चुनौतियों का सामना किया जा सकता है। लेकिन जिस चीज़ की तत्काल आवश्यकता है वह आधुनिक वास्तुकला के मूल्य के बारे में धारणा में बदलाव है, हम उनका आकलन कैसे करते हैं।

–अविनाश जोशी,
स्वतंत्र लेखक एवं वरिष्ठ पत्रकार

जिला मुख्यालय पर चूरू महोत्सव-2025 का भव्य शुभारंभ

'जिले में चूरू महोत्सव 18 साल बाद आयोजित किया जा रहा है, यहां के हुनर को एक मंच मिले, इसी प्रयास के साथ यहां की छिपी हुई कला को प्रदर्शित करने का अवसर मिलेगा'

विधायक हरलाल सहारण सहित अतिथियों ने चूरू महोत्सवका विधिवत शुभारंभ किया।

कार्यक्रम में कलाकारों ने नृत्य की प्रस्तुति दी।

चूरू, (निसं)। जिला मुख्यालय पर शनिवार को चूरू महोत्सव-2025 का शुभारंभ हुआ। पुलिस लाइन मैदान में बनाए गए कला मंच पर मुख्य अतिथि विधायक हरलाल सहारण ने चूरू महोत्सव-2025 का विधिवत शुभारंभ किया।

इस अवसर पर विधायक हरलाल सहारण ने कहा कि जिले की ऐतिहासिक, साहित्यिक व सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण करने की दिशा में जिला मुख्यालय पर हो रहे चूरू महोत्सव को हम सबकी सक्रिय भागीदारी से एक सफल आयोजन बनायेंगे। चूरू का इतिहास बहुत ही गौरवमयी रहा है। हम यहां की समृद्ध विरासत को सहेजें और भावी पीढ़ी को भी यह विरासत में दें। हम यहां की परंपराओं और संस्कृति का संचार करें और लोकरंग का आनंद लें। उन्होंने कहा कि जिले में चूरू महोत्सव 18 साल बाद आयोजित किया जा रहा है। यहां के हुनर को एक मंच मिले, इसी प्रयास के साथ यहां की छिपी हुई कला को प्रदर्शित करने का अवसर मिलेगा।

इस अवसर पर जिला प्रमुख वंदना आर्य ने कहा कि हम सब अपने संबंधित प्रयासों से जिले की संस्कृति व सांस्कृतिक परंपराओं का संवर्द्धन व संरक्षण करें। यहां के हुनरबाजों के हुनर को प्रोत्साहित करें। उन्होंने कहा कि हम नई पीढ़ी को परंपराओं, संस्कृति, ऐतिहासिक विरासत से जोड़ें और गौरवगाथा से उन्हें परिचित करवाएं। जिला कलेक्टर अभिषेक सुराणा ने कार्यक्रम की जानकारी देते हुये अतिथियों का स्वागत किया। इस दौरान एसपी जय यादव, एडीएम अर्पिता सोनी, सीईओ श्वेता कोचर, एसडीएम बिजेंद्र सिंह, तहसीलदार अशोक गोरा, डीवाईएसपी सुनील झाझड़िया, एसीईओ दुर्गा ढ़ाका, मदनलाल, नरेंद्र सिंह शेखावत, डॉ. मंगल जाखड़, नगेंद्र सिंह सहित अधिकारियों ने अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पर पूर्व सभापति विजय शर्मा, सुशील लाटा, धर्मेंद्र राकसिया, दौलत तंवर, दीनदयाल सैनी, सुरेश सारस्वत, नरेंद्र कंवल, हेम सिंह, भास्कर शर्मा सहित बड़ी संख्या में प्रतिभागी विद्यार्थी व नागरिक उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन प्रीति सक्सेना व बजरंग हर्षवाल ने किया।

- **'चूरू का इतिहास बहुत ही गौरवमयी रहा है, हम यहां की समृद्ध विरासत को सहेजें और भावी पीढ़ी को भी यह विरासत में दें'**
- **अधिकारियों, जनप्रतिनिधियों ने फीता काटकर क्राफ्ट बाजार का उद्घाटन किया और बाजार का अवलोकन किया**

क्राफ्ट बाजार का उद्घाटन कर किया अवलोकन :- इस अवसर पर विधायक हरलाल सहारण, जिला प्रमुख वंदना आर्य, जिला कलेक्टर अभिषेक सुराणा, एसपी जय यादव, प्रधान दीपचंद राहड़, एडीएम अर्पिता सोनी, सीईओ श्वेता कोचर सहित अधिकारियों, जनप्रतिनिधियों ने फीता काटकर क्राफ्ट बाजार का उद्घाटन किया और भ्रमण कर क्राफ्ट बाजार का अवलोकन किया। अतिथियों ने क्राफ्ट बाजार में राजीविका द्वारा लगाई गई स्टालों व विभिन्न विक्रेताओं द्वारा लगाए गए उत्पादों की प्रदर्शनी का अवलोकन किया। इस अवसर पर अतिथियों ने समारोह स्थल पर लगाई गई कला दीर्घा में फोटो, पेंटिंग, स्केच आदि कलाओं की प्रदर्शनी का अवलोकन किया और सराहना की।

राशिफल रविवार 23 फरवरी, 2025

पंडित अनिल शर्मा

फाल्गुन मास, कृष्ण पक्ष, दशमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2081, मूल नक्षत्र सायं 6:43 तक, वज्र योग दिन 11:19 तक, विष्टि करण दिन 1:36 तक, चन्द्रमा आज धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कुम्भ, चन्द्रमा-धनु, मंगल-मिथुन, बुध-कुम्भ, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से सायं 6:43 तक है। आज भद्रा सायं दिन 1:56 तक है। शनि अस्त पश्चिम दिन 2:51 पर होगा। आज स्वामी दयानन्द सरस्वती जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 8:25 से 9:50 तक, लाभ-अमृत 9:50 से 12:40 तक, शुभ 2:05 से 3:30 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 7:01, सूर्यास्त 6:20

मेष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। मित्रों/रिश्तेदारों से अनबन हो सकती है।

मिथुन
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

कर्क
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। किसी भी कारण से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। विवादित मामलों में राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

सिंह
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आवश्यक मामलों में दुविधा बनी रहेगी। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा।

कन्या
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आज धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।

तुला
महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है।

वृश्चिक
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

धनु
मानसिक तनाव से राहत मिल सकती है। मन:स्थिति में सुधार होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा।

मकर
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कुंभ
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आज महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बना हेगा।